RNI Reg. No. GUJHIN/2016/70892 AHD-C/83/2021-2023

वर्ष ४ • अंक ८०
वार्षिक शुल्क रू. १५०/-
प्रत रू. १५/-

नवम्बर २०२३
कारतक सुद-३
वि.सं. २०८०
युगाब्ध ५१२८

समरसता से ही राष्ट्ररक्षा

समरसता सेतु

संपादक : देवजी रावत

शुभ दीपावली

देश भर में मनाई महर्षि भगवान वाल्मीकि जयंती
२२ जनवरी को बिराजेंगे अयोध्या में भगवान श्री रामलल्ला

बिहार पुलिस कार्यवाई के विरोध में महामहीम राज्यपालजी को आवेदन

पेजावर मठ स्वामि श्री प्रसन्नतीर्थजी महाराज कर्णाटक हुबली शहर सेवा वस्ती अनुसूचित जाति परिवार में आतिथ्य स्वीकार किया । समरसता संदेश अपने आचरण से दिया ।

'भ्रमित विमर्स' हमारी पहेचान मीटाने का षडयंत्र
– डॉ. सुरेन्द्र जैन,
केन्द्रिय संयुक्त महामंत्री विहिप

देश भर में विश्व हिन्दु परिषद द्वारा मनाई गई महर्षि भगवान वाल्मिकी जयंती

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर "वाल्मीकी समागम" का आयोजन दिल्ली के लाल किला में हुआ। मंच पर मा.श्री आलोककुमारजी केन्द्रिय कार्याध्यक्ष विहिप तथा वाल्मिकी समाज के महानुभाव

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर उत्तराखंड के हल्द्वानी शहर में समरसता संगोष्ठी का आयोजन हुआ। विहिप के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन मा.श्री विनायक रावजी देशपांडेजी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सभागृह उपस्थित नगर के प्रबुद्ध जन।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर महर्षि वाल्मिकी जयंती पर जिला भोलेनाथ हनुमान टेकरी, पानी की टंकी सागर विभाग, पौधा रोपण करकर और उत्सव मनाया गया।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर नहेरु बस्ती गुड चौराहा शाम ६ बजे मनाई गई। विहिप, बजरंगदल, मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी एवं हिन्दु समाज के सभी भाई-बहन माताये उपस्थित रही।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर विश्व हिन्दू परिषद मालवा प्रांत - इन्दोर प्रसिध्ध गोगा देवजी के मंदिर में वाल्मिकी जयंती मनाया गया। विभाग संगठन मंत्री अभिषेकजी, विभाग समरसता प्रमुख दिनेश सेनजी, श्री योगेश जोषीजी एवं दुर्गेश्वरी संगठन के द्वारा स्मृति चिह्न भेट कीया गया।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर भगवान महर्षी वाल्मीकी उत्सव दि. २८-१०-२३ डांडेश्वर जिला, कोंकण प्रांत सामाजिक समरसता विभाग द्वारा सामुहिक हवन, यज्ञ, सहभोज प्रसाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर कानपुर प्रांत खागा जिला दि. १-११-२३ को सम्पन्न हुआ।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर भगवान महर्षी वाल्मीकी उत्सव दि. २८-१०-२३ उत्तर बंग के सीलीगुडी शहर में मनाया गया। क्षेत्र समरसता प्रमुख श्री गौतम सरकार एवं अन्य कार्यकर्ता बंधु गण उपस्थित रहे।

संपादकीय

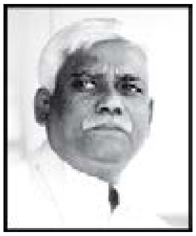

परम स्नेहीश्री, कार्यकर्ता,
बहेनो/भाईयो,
सादर प्रणाम,

“हमारे आदर्श - आदि ज.गुरु श्री शंकराचार्य”

शुभ दिपावली

हम हिन्दु हैं। आज अपने समाजकी अत्यंत दीन अवस्था है। अपने समाज को कई प्रकार के संकटो का सामना करना पड़ रहा है। संकटो में से हमें रास्ता निकालना है। केवल इश्वर की प्रार्थना करने से यह नहीं होगा। हमे अपने समाज में संगठीत शक्ति निर्माण कर, उसके बल पर सारी दुनिया को अपने पराक्रम-पौरुष का परिचय देना हैं। इसके लिए हमे अथाग परिश्रम करना पड़ेगा। अपने आद्य सरसंघचालक बचपन से ही सोचा करते थे कि हम “हिन्दु” इस विशाल देश के स्वामी होकर भी मुठ्ठीभर विदेशी लोगों के गुलाम क्यों बने? संघ-स्थापना के पूर्व उन्होंने विभिन्न आंदोलनों और संस्थाओं में भाग लिया था। उन कार्यो का अनुभव लेने के पश्चात् उन्होंने उन सभी संस्थाओं के परित्याग किया और संघकार्य समाज के सामने रखा।

हम लोग कभी सारी दुनिया को अपने सामने नत-मस्तक करने की बात करते हैं, क्योंकि हमारे पूर्वजों ने अपने पराक्रम से यह कर दिखाया था। हमें स्मरण है कि एक समय अपना भगवा ध्वज काबुल के पार फहरा था। वर्तमान में भी हम सब देश-धर्म को विश्वगुरु बनाने का कार्य कर सकते है। अपने इतिहास के महापुरुष आदि जगतगुरु शंकराचार्यजी ने केवल 9 वर्ष की आयु में ही अपने लक्ष्य कर्तव्य के बारे में विचार किया था। उस समय की परिस्थिति अत्यंत विकट थी। आज के समान उस समय यातायात के साधन नहिं थे। इधर-उधर घने जंगल थे, जिनमें हिंसक पशु, लुंटेरे और हत्यारे संचार करते थे। शंकराचार्यजी अकेले थे और उनके विचारों का विरोध करने वालें असंख्य लोग थे। एसी अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में भी शंकराचार्यजी ने जीवन के शेष 24 वर्षो तक पूरे भारतवर्ष की पैदल यात्रा विभिन्न संकटो का सामना करते हुए की, अनेक विध्वान पंडितो को अपने विचारों के अनुकूल कर उन्हें अपना शिष्य बनाया।

आजकल लोग कहते हैं कि अपना देश बहुत विशाल है, इसमें अनेक भेद हैं, अनेक समस्या है, शिक्षा का अभाव, आर्थिक बिछडापन, जातिभेद-प्रांत भेद, भाषाभेद जैसी एनेक समस्याग्रस्त है, देश इसमें एनेक प्रकार की राजनैतिक पार्टिया अपने वोट की खातिर तुष्टीकरण की निति अपनाकर देश-समाज-धर्म को हानि पहुंचाने का कार्य कर रहे है। एसा हमारे देश के लोग चर्चा कर रह हैं वे एसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि उन्होंने आदि जगतगुरु शंकराचार्यजी के समय का विस्मरण हो गया है। आज हम सभी स्वयंसेवक - कार्यकर्ता के समक्ष आदिजगत गुरु शंकराचार्यजी महाराजश्री का आदर्श होना चाहिये की अल्प आयु में किए गये दृढ निश्चय तथा उसके बाद उनके द्वारा किए गए अभूतपूर्व देश एकता और वैदिक - हिन्दु धर्म की संस्थापना कार्य का आदर्श हम सबको रखकर कार्य में आज लगना चाहिये।

आज इस्लामिक मजहबी कट्टरता के दुष्टपरिणामों से संपूर्ण दुनिया त्रस्त हैं। “मेरा मजहब ही सही है बाकी को इसे स्वीकार करना ही पड़ेगा और यदि वे इसे स्वीकार न करें तो उनको समाप्त करने का आसमानी आदेश मेरे पास हैं” का एकपक्षीय साम्राज्यवादी चिंतन शांतिपूर्ण यह अस्तित्व को स्वीकार कर नहीं करता और सतत संघर्ष निर्माण करता है यह धटनायें हमने फीलीस्तानी हमास के आंतकवादीयो द्वारा जेहादी - नृशंस हत्याकांड इजरायेल पर कीया इससे ध्यान में आता है। भारत मजहबी कट्टरता का पिछले कई वर्षो से मुकाबला कर रहा है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी ने स्पष्ट लीखा है कि इस्लामिक आंक्राताओं का उदेश्य केवल भारत को लूंटना नहीं बल्कि हिन्दु मंदिरो को तोड़कर आस्थाओं को नष्ट करना, हिन्दुओं का नरसंहार करना, हिन्दु महिलाओं का शीलभंग करना तथा संस्कृति को नष्ट करना ही था।

शुभ दिपाली विक्रम संवत 2080 के पावन पर्व पर हम सब हमारे पूर्वजो से प्रेरणा ले - संकल्प के साथ प्रण ले सैक्युलारीजम के नाम पर महजबी कट्टरता का पोषण करनेवाले तत्वो को हिन्दु समाज आगाह करती है कि वे तात्कालिक स्वार्थो के कारण इस राष्ट्रघाती प्रवृत्ति का समर्थन न करे।

मजहबी कट्टरपंथी अलगाववादी तत्वो को परास्त करके ही इनकी चुनौती का स्वीकार कीया जा सकता है। इसके लिए समाज के सभी वर्ग को अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

वर्ष - ८ **अंक - ८१**

समरसता से ही राष्ट्ररक्षा
समरसता सेतु

संपादक	: देवजीभाई रावत
सहसंपादक	: नरेश रावत, रशेष रावल
संरक्षक	: प.पू.महंत श्री १००८ शंभुनाथ महाराज - झांझरका, गुजरात (पूर्व सांसद राज्य सभा)
	मा. विनायकरावजी देशपांडे - अ.भा.संगठन महामंत्री वि.हि.प.
	मा. श्री मधुभाई कुलकर्णी अ.भा.कार्य कारणी सदस्य **RSS**
	मा. श्री इन्द्रेशकुमार अ.भा. कार्य कारणी सदस्य **RSS**
	श्री नरेश पाटील - कोंकण प्रांत समरसता प्रमुख, मुंबई
	श्री अशोकभाई रावल - क्षेत्रीय मंत्री, वि.हि.प.(गुजरात)
	श्री अश्विनभाई पटेल - क्षेत्रीय सह मंत्री वि.हि.प. (उत्तर गुजरात)
हिन्दी परामर्शदाता	: श्री डॉ. धर्मनारायण भारद्वाज (चित्तोड़)
कानूनी परामर्शदाता	: श्री हसमुखभाई पटेल (अधिवक्ता - गु.हा.कोर्ट)
प्रचार-प्रसार-मिडीया	: श्री दिपक मिस्त्री (संयोजक)
	श्री चिराग अश्विनभाई पटेल (सहसंयोजक)
व्यवस्था	: श्री रमेशकुमार

संपर्क - पत्र व्यवहार
धर्मादा होस्पिटल, गांधी आश्रम के पास, अमदावाद - 380 027. गुजरात.
संपर्क : मो.: 08980000327
E-mail : samrastasetu2010@gmail.com • Web : http:/vhp.org

देश भर में मनाई महर्षि भगवान वाल्मीकी जयंती

22 जनवरी को बिराजेंगे अयोध्या में भगवान श्रीरामलला

विश्व हिन्दु परिषद ने रामगढ़, हजारीबाग एवं बुंडू के सूर्य मंदिर परिसर में महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में विश्व हिन्दु परिषद के केंद्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार उपस्थित थे।

इस अवसर पर आलोक कुमार ने 22 जनवरी को अयोध्या के नूतन श्रीराम मंदिर में हो रहे पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम लला का नूतन विग्रह का प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में सभी हिन्दु जनमानस को आमंत्रित करते हुए कहा 22 जनवरी 2024 को झारखंड सहित देश के सभी प्रांतो में दीपोत्सव मनाया जाएगा। उन्होंने कहा की प्राण प्रतिष्ठा के दिन झारखंड में कोई भी घर ऐसा न हो जिसमे दीपक न जले। उन्होंने कहा समस्त हिन्दु जनमानस अपनी-अपने क्षेत्र के मंदिरों में एकत्रित होकर कार्यक्रम के 24 घंटा पूर्व से धार्मिक अनुष्ठान करें एवं अयोध्या में हो रहे कार्यक्रमों का अपने -अपने मंदिरों में स्क्रीन अथवा टीवी के माध्यम से अवलोकन करें तथा अयोध्या में भगवान रामलला का आरती जिस समय हो उसे समय सभी जनमानस अपने-अपने मंदिर में ही खड़ा होकर आरती करें। उन्होंने कहां त्रेतायुग में भगवान पुरुषोत्तम श्रीराम को 14 वर्ष के बाद अपना राज मिला था परंतु इस कलयुग में श्रीराम लला 496 वर्षो बाद भव्य, दिव्य एवं अलौकिक भवन पर विराजमान होंगे। हम सभी इस क्षण को अपने आंखों से देखेंगे यह हम सभी के लिए परमसौभाग्य का विषय होगा, ऐसे क्षण में त्रेतायुग की भांति इस युग में भी दूसरी दीपोत्सव कर भगवान पुरुषोत्तम श्रीराम जी का स्वागत करें। उन्होंने कहा इस निमित्त विश्व हिन्दु परिषद के कार्यकर्ता घर-घर जाकर भगवान पुरुषोत्तम श्री रामजी का चित्र एवं पीले चावल देते हुए भगवान पुरुषोत्तम श्री रामजी के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण देंगे। उन्होंने कहा इस कार्यक्रम के निमित्त देश के 5, 50 लाख मंदिरों में कार्यक्रम होंगे जिसमें 7 करोड़ से ज्यादा परिवार पूजन-अर्चन करेंगे। उन्होंने कहा श्री राम लला मंदिर परिसर में भगवान श्री राम दरबार के साथ-साथ महर्षि वाल्मीकि जी, गुरु वशिष्ठ, गुरु विश्वामित्र, श्री हनुमान जी, शबरी माता एवं जटायु का भी पूजन-दर्शन करेंगे।

भगवान वाल्मीकि आश्रम दिल्ली के पूज्य स्वामी विवेकनाथ जी महाराज ने कहा भगवान वाल्मीकि रामायण माहाग्रंथ की रचना कर भगवान पुरुषोत्तम राम के नीति, मर्यादा एवं आदर्श को मानव कल्याण के लिए किया। आज भगवान पुरुषोत्तम श्री राम को घर-घर तक ले जाने में भगवान वाल्मीकि का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने कहा हिन्दु समाज सदैव से समरस समाज रहा है, काल खंडो में जाति-पाती, ऊंच-नीच का भेदभाव देकर समाज को तोड़ने का प्रयास किया है आज पुण: विश्व हिन्दु परिषद समाज को समरस करने की दिशा में कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर रामगढ़ रेलवे स्टेशन के समीप विश्व हिन्दु परिषद-बजरंग दल रामगढ़ जिला कार्यालय का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर, वैदिक मंत्रोच्चारण, हवन व गौपूजन के साथ पूरे विधि विधान के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में बच्चियों के द्वारा स्थानीय लोकनृत्य व गणेश वंदना के साथ तथा अंग वस्त्र देकर अतिथियों का स्वागत किया गया।

विश्व हिन्दु परिषद/ सामाजिक समरसता कानपुर प्रांत के बैनर तले आदि कवि एवं रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि जी की जयंती समारोह कार्यक्रम फतेहपुर जनपद के खागा नगर स्थित पण्डित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय में संपन्न हुआ जिसमे प्रांत सामाजिक समरसता प्रमुख डाक्टर शिव स्वरुप विश्वकर्मा, जी ने महर्षि वाल्मीकि जी के चरित्र चित्रण पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित राष्ट्र भक्तों को संबोधित किया इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से फतेहपुर विभाग संरक्षक असीस गुप्ता ,खागा जिला उपाध्यक्ष नरेश चंद्र कश्यप,जिला सह समरसता प्रमुख गोरेलाल, खागा नगर सह मंत्री असीस सिंह विधालय के प्रधानाचार्य मंथुलाल जी आदि सभी 400 बच्चों के साथ मौजूद रहे ।

भवदीय
डाक्टर शिव स्वरुप विश्वकर्मा
प्रांत समरसता प्रमुख
विश्व हिंदू परिषद कानपुर प्रांत

RAKESH CHEMICALS (CHHATRAL)

ASHWIN PATEL M.: 9376488802
RAVI PATEL M.: 9998946815
CHIRAG PATEL M.: 9724764292

HEAD OFFICE : Rakesh Plaza, 52, Shayona Estate, Opp. Meldi Estate, Prasang Party Plot Road, Gota, Ahmedabad - 380061.
Ph.: 079-65444145 - 146 - 147 - 148 **E-mail :** rakeshchem@ymail.com, rakeshchemicals@aol.com
BRANCH OFFICE : 4, Bansidhar Complex, Opp. Hotel Amirash, Village : Chhatral, Ta. : Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729
Ph.: 02764-234165 **Mobile :** 9376488804

"भ्रमीत विमर्श" - हमारी पहचान मिटाने का षडयंत्र

– डॉ. सुरेन्द्र जैन (केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री विहिप)

अ.भा.सो. मीडिया प्रचार कार्यकर्ता प्र.वर्ग पिराणा गुजरात

डॉ. सुरेन्द्र जैन प्रवचन के अंश

भारत का अमृत महोत्सव समाप्त हो गया अभी हम अमृतकाल की यात्रा प्रारंभ करने वाले है। भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक हम लक्ष्य पूर्ण करेंगे। स्वतंत्रता के बाद भी गुलामी के बहुत सारे अवशेष हमारी छाती पर थे। उ.दा. दिल्ली में अकबर मार्ग, हुमायु मार्ग, औरंगझेब मार्ग, दिखता था, कहीं राणा प्रताप मार्ग शिवाजी मार्ग गुरु गोविंदसिंहजी मार्ग नहीं दिखते थे। जिन्होने अपना सर्वस्व अर्पित कीया एसे महापुरुषो के नाम कहीं नहीं दिखते थे। उनको तो विलन के रूप में दिखाया गया। हमको गुलामी के स्मारक दिखाये गये। हिन्दु समाज पर 550 वर्ष का गुलामी का प्रतिक बाबरी ढांचा टूट चूका है। विरोध हुआ जब अब्दुल कलाम मार्ग का नाम दिया गया तो उसका भी विरोध हुआ था। इनको गुलामी के चिन्ह दिखाई देते है लेकीन दूसरे नहि दिखते यह है वैचारिक गुलामी के चिन्ह, जिनको पहचानना होगा और दूर करना जरुरी है।

केरल का मोपला नरसंहार देश की स्वतंत्रता का आंदोलन नहि था, क्रूरता-पीडा अत्याचार हिन्दुओ पर खिलाफत के नाम पर कीया गया था, जिन लोगों ने किया वैसे 4 पेढी तक वैसे लोगों को स्वतंत्रता का पारितोष दिया गया - उसपर रोक लगी तो विरोध हुआ। कर्नाटक, केरल में हिजाब पर विवाद-विरोध हुआ। लुटेरा टिपु सुलतान की प्रशंशा और शीख क्रान्तीकारीओं महापुरुषो पर विवाद खडे किये गये। यह वातावरण को बदलने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी हमारी है। गुलामी के चिन्ह जो दिखाई नहीं देते उनको भी पहचानना, वैचारीक, मानसिक गुलामी के चिन्हो को दूर करना - हमारे समाज के विचारो में षडयंत्रपूर्वक घुसाये है उनको समाज गौरव मान बैठा है उसे भी मिटाना दूर करना है। उ.दा. तमिलनाडु राज्य का मंत्री उदयनिधि स्टालिन सनातन समाज मंदिर बोर्ड के कार्यक्रम में हिन्दु धर्म को - सनातन को समाप्त करेंगे एसी खुल्लेआम चुनौति देता है और आर्य द्रविड की स्टोरी जीवीत करने का प्रयाश कर हिन्दु धर्म को अपमानित कैसे कीया जाय एसे षडयंत्र कर रहा है।

पंजाब राज्य के मलेक कोटला - मुस्लिम बहुल जीला एक कार्यक्रम में 'गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस' चर्चा होती है की जिला क्यों बनाया गया क्योंकि इस मलेक कोटला-रीयासत के नवाब ने गुरु गोविंदसिंह जी के 2 बच्चे (शाहजादे) को दिवार में चुनाये जाने का विरोध कीया था - यह विरोध के सन्मान में यह नाम दिया गया - गुरु गोविंदसिंह जी को खतम करने के षडयंत्र - रचने वालो के कार्यक्रम गुरु के हत्यारा के कार्यक्रम में शीख समाज भाग लेता है। गुरु के बच्चो को बचाने वाला कह कर जुठी कहानी लोगो के समक्ष रखकर एसे नेरेटिव हमारे दिमाग में बैठाया जाता है। पाकिस्तान में हिन्दु शीखो पर अत्याचार बलात्कार पर कोई विरोध प्रदर्शन नहि करते यह मानसिक गुलामी को पहचानना इसे दूर करना

"नसरसंहार एक पेढि को खतम करता है
मति भ्रम पुरी नश्ल को खतम करते है।।"

एसा मतिभ्रम आत्मीयता से हीन - उ.दा. मिस्र, फ्रान्स अपने पूर्वजोके पर हुए नरसंहार को टोटल भूल चके है - और उनके जीवन का आदर्श कुछ और अलग बना है। - ब्रेनडेड - समाप्त हो गया = मतीभ्रम = ब्रेनडेड है। शस्त्र के द्वारा व्यक्ति पुरी तरह नहि मरता लेकीन उसकी मति मारी जाय तो पुरी तरह खतम हो जाता है। दुर्भाग्य से हिन्दु समाज में यह दोनो आज हो रहा है।

इस्लाम जहाँ गया, संस्कृति सभ्यता को समाप्त किया, भारत में हम इस्लाम को हजम नहीं कर सके। इस्लाम नरसंहहार और युरोपियन आक्रमणने हमारी प्रज्ञा को समाप्त किया। उ.दा. मेकोलो शिक्षा पद्धति भारत का प्रधानमंत्री ब्रिटन के दौरे पर जाता तो कहता है "कि हम आपके ऋणी है। ब्रिटन ने राष्ट्र के रूप में हमे एक देश दिया, रेल, बांध, हवाई जहाज दिये।

विमर्श - "200 वर्ष अंग्रेज शासन परिणाम - 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त हुई लेकीन मानसिक रूप में हम आझाद नहि हुए। पू. रविन्द्रनाथ टागोरजी - ब्रीटीश के बारे में कहते है कि "ब्रीटीश आक्रमण मायावी आक्रमण ने हमारे सभी स्तरो को स्पर्श कीया वह मायावी शारीरिक युद्ध था।

* अंग्रेजो ने पंजाब जलियावाला बाग बडा नरसंहार किया, बस्तर में किया, गोवा में इसायत के प्रचार हेतु ख्रिस्ती मिशनीरीओं ने किया।

* मानसिक रूप से शारीरिक रूप से - सामाजिक रूप से हमें परास्त करने का प्रयाश कीया, यह विमर्श - षडयंत्रो समझना होगा।

* 'विमर्श' पूर्ण सत्य कभी नहीं होता।

आर्य बहार से आये - यह थियरी - विमर्श

पूर्वोत्तर विमर्श लोगों को आक्रमणकारी यहो ने बसाया, बर्मा तरफ रहते एसे पूर्वोत्तर का नहि सब बहार से आये है। एसे तर्क दिये - इसे विश्वविद्यालयो में ऐकडमीक स्तर पर सेमिनार चर्चा, साहित्य में पढाया, स्कूलो, कॉलेजो तक पढाया। प्रभावशाली लोगो के माध्यम से विषय हमारे सामने रखे गये। शीख हिन्दु से अलग है। कब से गुरुतेगबहादुर के बाद भाई मतीदास बलीदान तोशखाना - अकबरने भेट कीया। यह पंजाब स्वर्ण मंदिर के तोशखाना में यह 200 वर्ष का इतिहास कोई महानुभाव से बुलवाना - लिखवाया और स्थापित कीया यह हम सब को - हिन्दु

समस्त समाज से खीख समाज को अलग करने का षडयंत्र है।

* घुंघट प्रथा - हिन्दु समाज में -

अंग्रेजो ने विमर्श - हम शरीयत के साथ छेडखानी नहि होने देंगे यह अल्लाह की देन है। यह लागू कब से हुआ, लागु 1936 से हुआ। इस से पहले 7 शरियत 1936 अंग्रेजो ने बनाई थी - अंग्रेजोने दि है यह अल्लाह की देन नहि है। विश्व के अलग अलग देशो में शरियत एक नहि - अलग अलग है।

* हिजाब विवाद कर्नाटक - नेरेटिव सेट कीया।

* ज्युडशरी - हमारी न्यायपालिका - सर्वोच्च न्याय पालिका - त्रिपल तल्लाक पर एक चीफ - जस्टीश कहते है। कुरान हदीश में है तो, तो त्रिपल तल्लाख वेलीड है। हम कुछ नहि कर सकते।

- हिन्दु ग्रंथ में नहि - शबरीमाला मंदिर प्रवेश - शबरीमला महिला प्रतिबंध ग्रंथो में वर्णन - तो सर्वोच्च न्यायपालिका के माननीय मुख्य न्यायाधीश कहते है की यह विषय तो व्यक्ति की अभिव्यक्ती की आझादी का है। यह विमर्श मानसिक गुलामी के प्रतिक है।

* विमर्श - हिन्दु धर्म समाज में घुंघट प्रथा ठीक नहि - सीता, द्रौपदी स्वयंवर माता-सीता विवाह विवाद नहि।

* मोमहंमद घोरी के दांत खट्टे करने वाली नायकादेवी - मुस्लिम आक्रमणकारीओं से संघर्ष करने कारण - प्रतिबंध यह वर्णन श्री लालालजपतराय जी ने कीया है।

चार प्रकार के भ्रम फेलाते है।

1. डी नेशनलाईज ध सोसायटी, 2. डीसोसल लाईज ध हिन्दु, 3. डी हिन्दु नाईज ध नेशन - (1) यह राष्ट्र कीसीका नहीं है। (2) हिन्दु समाज का विखंडीतकरण कर दिया जाय। हिन्दु शब्द नहीं, हिन्दु इतिहास नहि, सभी ग्रंथे सब आर्यो के है। राम चरित मानसको एक दोहे को लेकर अपमानित करो, जुठ्ठी कहानी शंम्बुक वध, बाद में जोडी गई, ग्रंथो को अपमानित कीया गया। हिन्दु को टुकडे टुकडे में बांटना * वनवासी-आदिवासी- मुलनिवासी-अनुसूचित समाज को तोडो उ.दा. वाल्मीकी आरक्षण है लेकीन हमको कुछ मिला नहीं हमें कुछ दिजीये, हिन्दु को बांटना, तोडना, (सिवर घटना) (3) राष्ट्र की पहचान हिन्दु राष्ट्र आज खालीस्तान - गजवा ये हिन्द, द्रविड स्थान मांगते है। क्या गलत है, नागा-मीजो, अलग राष्ट्र है क्या गलत है। यह नेरोटिव चलते है।

- सर एहमद ने 2 राष्ट्र की कल्पना की थी एक हिन्दुओं का हिन्दुराष्ट्र और मुस्लिम राष्ट्र।

- कोम्युनीस्टो ने 55 राष्ट्रो की कल्पना की आज हर एक समूह राष्ट्र बना है।

- वेद उपनिशद हिन्दु दर्शन यह हिन्दु पहचान पिछे रह जाय - वसुदैव कुटुंबकम्, सत्य मेव जयते, ग्रंथो - वेद उपनिशदो से है - हिन्दु ग्रंथ है।

- हिन्दुओं का देश से सबम्ध तोड दिया जाय यह पहचान मिटा दि जाय एसे जुठे - **भ्रमीत विमर्श** गडे जाते है। यह **हमारी पहचान**-अस्तित्व **मिटाना का षडयंत्र** है। इसका मुलाबला करना है।

कौन है यह षडयंत्रकारी - देश के दुश्मन?

(1) इस्लाम - पहले तलवार के बल पर साम्राज्य इस्लामका विस्तार ताडका की तरह आक्रमक हमला। (2) इसायत - पूतना की तरह छदम आक्रमण सेवा - चालाकी षडयंत्र रचकर आज इसायत का साम्राज्य विस्तार करने के प्रयाश कर रहे है। इसायत ताडका तथा पूतना देनो तरह आक्रमण करता है। क्रुरता ही नहि पूतना का रूप सेवा का मुखौटा पहनकर हमला हिन्दु समाज पर करते है।

24 घंटो - रात-दिन विधर्मी षडयंत्र रचकर कार्य कर रहे है। उनसे UNO भी प्रभावित - जनरल एसेम्बली में प्रस्ताव - इस्लामिक फोबीया विश्व के लिए खतरा है - इस्लाम पर विश्व में दमन कीया जाता है। फ्रान्स में मुस्लिमो पर दमन - एक लडके का मृत्यु - पुरे फ्रान्स में हमले भारत में हमले हिजाब, मोभ लींचींग हो रहा है। इस्लाम पर आक्रमण - एसे प्रस्ताव में इस्लाम पर अत्याचार, हो रहा है एसा वातावरण बना कर दबाव खडा कर रहे है। उलटा - भारत में मुस्लिम बहुमतीयों पर अत्याचार हमले करते है, फ्रान्स में दंगे फसाद करते है। UNO का रेफरन्स लेकर टी.पी. देकर प्रचार।

* हमे क्या करना - विमर्श खडा करना - विमर्श दुनिया में आंतक का प्रर्याय इस्लाम। - भारत में धार्मिक यात्रा पर हमलों - शौर्ययात्राये, नूह हरियाणा धार्मिकयात्रा पर हमला - हाईकोर्ट में जाना, सुप्रिम कोर्ट में जाना, मानव अधिकार मंच से निवेदन - फेक्ट एन्ड फंडींग कमीशन पलायन - लेकीन उलट्टे विमर्श खडे करते है। इसायत ख्रिस्तीनिटि प्रेम, स्नेह, सद्भावना के प्रतिक है एसा चलाते है। - इनका इतिहास देशके लोगो के सामने लाने की जरुरत है। - महिला के विरूद्ध अत्याचार, उत्पीडन चर्च के द्वारा संपूर्ण इसायत ने कीया है यह लाने की आज आवश्यकता है। - वेटिकन सिटि से पंजाब-जलंधर तक इसायत के अत्याचार है यह पाप उजागर करने की 'कुजेड' - वीरहटींग की आज जरुरत है। - इनके आज आक्रमण के तरीके बदले है उदेश्य नहि लक्ष्य उनका हिन्दुस्थान को हिन्दु को तोडना समाप्त करना ही है। अर्बन नकसलाईट कलचर, मार्कशीस्ट वामपंथी समाप्त नहि यह षडयंत्र रच रहे है। उनके नाम से नहि लेकीन षडयंत्र वैसाही चल रहा है।

मणिपुर - चीन नकसललाईट इसके पिछे चर्च है। पुराना इतिहास क्या है ! दिमापुर - हिन्दु विस्तार वर्णन, खानमार्केट गेंग, टुकडे टुकडे गेंग को समजना पडेगा इनके षडयंत्र ज्यादा खतरनाक है। जाट-यादव अलग है - वामपंथी प्रचार करता है। ग्लोबल कोर्पोरेट वर्ल्ड-पुंजीवादी संस्कृति वाहक - धराने NGO - वॉलमार्ट, अेमेजोन, इत्यादि सांस्कृतिक आक्रमण कर रहे है। भारत से नमक, वस्तुओं कों अमेरिका का फलीपकार्ट

मंगवाता है। प्रचार विज्ञापन कडवार्चाथ - पर विज्ञानपन - हीरा दे कर बीबी को प्यार करना है - पति के प्रेम का प्रतिक एसे मार्ट से मंगवाना और देना शृंगार का टिका, मंगलसुत्र, बहनो के गले से गायब विज्ञापन में हो गया, हमारी संस्कृति पर हमला करते है। सांस्कृतिक हमला यह चार 4 शक्तिया करती है।

* विज्ञापनमां बेटि को खुश खबरी दे रही है मां कहती है। बेटि को तेरी इच्छा से जो हो - यह शरीर तेरा है बेटि को तेरी इच्छा से जो हो यह शरीर तेरा है बेटि कहती है यह शरीर मेरा है मेरी इच्छा एसा विज्ञापन TTP प्लेटफटर्म पर हमारे जीवन में प्रचार कर घुसाया जा रहा है। हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है।

* "बह्मचर्य" - विमर्श - मुक्त यौनाचार पति-पत्नी अन्य से तृप्ती कर सकती है। महिला अन्य के साथ संबंध रख सकती है। लीव इन रीलेशन शीप।

* गे - को किन्नर को भी विवाह की समंति हमारा कोर्ट का चर्चा का मुदा है एक + एक सेक्स - मुर्दो के साथ सेक्स संबन्ध जायज है। आपका मन नहि भरता सेक्स से तो मानव से नहि पशुओं - जानवरो में भी सेक्स तृप्ती करते है। यह सब OTP माध्यमो से आज हमारे देश में परोसा जा रहा है। यह षडयंत्रो का मुकाबला करना है। हमारा शोसल मीडिया महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। हम सबसे बडा इको-सिस्टम खडा कर शकते है। भारत को सबसे अधिक प्रभावित करने वाले पू. संतो के माध्यम से पू. संतो के साथ जीवंत संपर्क विश्व हिन्दु परिषद का है।

हमारे पास आचार्य, पुरोहित - पूजारी एक परंपरा है। हमारा समाज परिवार उनपर विश्वास करता है। जीवंत देवता पुरोहित हिमाचल प्रदेश में बडा संगठन है। प्रत्येक प्रांत में हमारा लीगल शेल है। अनुसूचित समाज में विश्व हिन्दु परिषद का समरस्ता कार्य संपर्क प्रस्थापित प्रत्येक राज्य में है। वनवासी में समाज विश्व हिन्दु परिषद का प्रभाव है। अध्यापको में हमारा काम है। मीडिया जगत में हमारा काम है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-स्तर पर इकोसीस्टम खडा हो, तीर्थयात्रामें लोग जाते है माता वैष्णव देवी प्रतिवर्ष 1 करोड श्रद्धालु दर्शन को जाते है। शबरीमला यात्रा - कावडयात्रा में देशभर में यात्रायें निकलती है। राजस्थान गोगा मेडी, रामदेवजी महाराज, यह सब के अंदर इको सीस्टम खडा हो - एक आवाज उठेगी तो दुनिया बदलेगी - विमर्श बदलेगे हमे आनेवाले समय इस दिशा विमर्श में लेजायेंगे तो परिणाम मिलेगा। उ.दा.

(1) सर्वोच्च न्यायपालिका - रामजन्मभूमि केश सुनवाई, क्या? सीखना काशी विध्वत परिषद और सभी अन्य संगठन पू. संतो ने सामूहिक विषय लेकर आवाज उठाई - लीगलशेले ने भी प्रस्ताव पारित कर विरोध कीया - सुप्रिम कोर्ट बार ऐशा प्रस्ताव 16 हाईकोर्ट जज, 150 शिक्षाविद् सर्वोच्च न्यायाधीश को पत्र आवेदन दिया तो परिणाम सफाई देनी पडी - की हमारे कहने का मतलब यह नहि था।

- इ को हिन्दु सीस्टम प्रचार विभाग महत्व का शोशीयल मीडिया में सक्रियता से कार्यरत हो जाते है तो परिणाम प्रभावित होता है। आज अखबारो, टी.वी. पर लोगो को विश्वास नहि। प्रिन्ट मीडिया में न्यूज एकदिन या कुछ घंटो तक शोसीयल मीडिया में चलता है। शोसीयल मीडिया के माध्यम से सत्ता परिवर्तन भी हो सकता है। उ.दा. मिस्त्र देश अमेरिका निति को प्रभावित शोसीयल मीडिया के माध्यम से होती है। 'स्पेश' होगा - मीश इनफरमेशन भी होगी तो शोसीयल मीडिया को हम पहले से सच्ची - सत्य जानकारी देते है तो परिणाम मिलता है।

संपर्क :- हमारी धरोहर - पर्यावरण का समाधान हमारी संस्कृति में ही है।

* मिलकर हम काम करे, ॐ सहनावतु धरोहर है - हिन्दु समाज की विशेषताओं को खोजकर सामने लाना है। हम युद्धके मेदान में खडे है। भारत का हिन्दु समाज युद्ध 4 शक्तियों के सामने करहा है।

* हमे तय करना है। लडकर मरना है या बिना लडकर मरना है। लडेंगे तो जितेगें यह विश्वास के साथ तय करना है।

यह लडाई हमारे सामने है। हम अमृत पुत्र है। भगवान की कृपा से हमे दायित्व मिला है। विमर्श की लडाइ को लडने वाले है। कब तक हम चर्चा करते रहेगे - हरेक विषयों के एक एक्सपर्ट हो एसा बनना आजकी आवश्यकता हैं।

सावधानी :- लडाई वही लड सकते है जो वह अपने आपको प्रोजकट नहि करता प्रोजकट की लालच में नहि पडता जो अपने आप को प्रोजकट करता हैं उसे पिछे हटना चाहिये।

हमारी लडाई केवल भारत तक सिमित नहि है, पुरे विश्व को यह लडाई प्रभावित करेगी। 'स्पेश' - 'शोसीयल मीडिया' मायावी झाल में सावधानियां रखते तैयार हो कर जाना है और लडाई में जीत कर आना है।

विश्व हिन्दु परिषद बजरंग दल द्वार जिला जिला संत नगर गांधी प्रखण्ड में श्री वाल्मीकी जयंती पूजन कराया गया इसमे उपस्थित विश्व हिन्दु परिषद बजरंग दल जिले के उपाध्यक्ष श्री चंद प्रकाश सबनानी जी, श्री विश्राम सिंह जी, मीना जी, श्री सीताराम जी, श्री जीवन पंडित जी, श्री अखिलेश नगर नितिन गोसर जी, अनिल अहिरवार जी, एवीएन अन्य कार्यकर्ता द्वारा आज मंदिर प्रांगण में साफ सफाई एवीएन पूजा अर्चन का कार्यक्रम विधि पूर्ण संपन्न साथ ही मंदिर का पुनर्निर्माण करने करने पर विचार विमर्श किया गया.....

वाल्मीकी जयंति जयपुर क्षेत्र

* जयपुर प्रांत कार्यक्रम 18 - 1000
* जोधपुर प्रांत कार्यक्रम 25 - 2956
* चितोंड प्रांत कार्यक्रम 26 - 1500

बिहार पुलीस कार्यवाही के विरोध में महामहीम राज्यपाल जी को आवेदन

सेव में,

महामहिम राज्यपाल महोदय, बिहार

विषयः बेगूसराय जिले के बलिया में मूर्ति विसर्जन के दौरान हुई हिंसा के संदर्भ में निर्दोष बजरंग दल कार्यकर्ताओ पर पुलिस कार्यवाई के विरोध में।

दिनांक 22-09-2023 को खातोपुर स्थित शिवमंदिर को रात्री में मुस्लिम युवक द्वारा शिवलिंग खंडित किया गया। जिसके आक्रोश में 23-09-2023 को वहां के आस पास समाज ने रोड जाम कर विरोध व उग्र प्रदर्शन किया तोड़-फोड़ किया..... उसमें भी हमारै संगठन को बदनाम करने के लिए हमारे प्रांत सुरक्षा प्रमुख लाखो थानान्तर्गत शाहपुर निवासी पंकज सिंह शिवराम सिंह जी का नाम दिया गया जो वहां थे ही नहीं।

हमारे प्रांत सहसंयोजक शुभम भारद्वाज जी को 8 घंटें थाने पर बुलाकर बुरे तरीके से पूछताछ किया गया। उन पर पहले भी 7-8 मुकदमा दर्ज किया गया है।

दूसरी घटना अभी दूर्गा पूजा विसर्जन के दिन 25-10-2023 को संध्याकाल पर घटी... जिसमें माँ दुर्गा के प्रतिमा पर मुस्लिमो के द्वारा पथ्थरबाजी कर मूर्ति क्षतिग्रस्त किया जिसके कारण समाज उग्र हो प्रतिकार किया। बलिया की घटना तो सरासर प्रशासन अपनी नाकामी छुपाने या सरकार के इशारे पर हमारे जिला सहसंयोजक अमित रस्तोगी जी का कुछ नहीं मिला तो बिना सबूत मुख्य साजिशकर्ता में दे दिया... बलिया की घटना तो प्रशासन की सामाजिक की बू आ रही है।

1. जिले के जवाबदेह अधिकारी पुलिस कप्तान का मीडिया में दिए अपने ही स्टेटमेंट का बार-बार बदलना।

2. इतनी हरबराहट क्या थी बयानबाजी की सारी सबूत इकठ्ठा कर के देते।

3. स्वंय बोल रहे हैं मीट दुकान बंद कराया गया था प्रशासन के द्वारा जिससे नाराज मुस्लिम युवक ने रोड़ेवाजी की।

4. फिर बयान बदलते है कि रास्ते में तजिया के दौरान बांधा पोल पर झंडे को नोचने के कारण आपस में भिड़ गए जिसे प्रशासन ने शांत करा दिया।

5. बिना सबूत आधारहीन बयान की झंडा अमित के इशारे पर फाड़ा गया।

6. प्रशासन के नजर में डी जे प्रतिबंधित था तो शुरुआत में 3-4 घंटे पहले ही जब्त कर लेते।

7. विसर्जन के रूटचाट आपको पहले मिला हुआ था तो झंडे को व उस रास्ते के ईट पत्थर क्यों नहीं हटाए।

8. पहले की साजिश नहीं थी तो रेलवे लाइन पर उपयोग होने वाले पत्थर कैसे आए।

9. अपर्याप्त पुलिस बल के साथ आपके दंडाधिकारी कार्य कर रहे थे जो स्वंय लिख रहे हैं कि मै माहौल व विसर्जन के लिए इधर उधर दौड़ भाग रहा।

10. अमित के द्वारा कुछ दिन पहले गौ वंश से लदे गाड़ी को पकड़कर बलिया पुलिस के सुपुर्द कर केस दर्ज करने के लिए बोलने पर बलिया थानाध्यक्ष का धमकी देना कि मेरे क्षेत्र में गौं रक्षक बनोगे तो ऐसा केस में डालेंगे की सड़ जाओंगे जेल में।

ये सारी बातों को ध्यान देने पर पता चला है कि बेगूसराय पुलिस हमारे संगठन व कार्यकर्ता को बदनाम करने व राजनीतिक दबाव में काम कर रही है विश्व हिन्दु परिषद मांग करती है की घटना की निष्पक्ष जांच कर न्याय दिया जाए और निर्दोष कार्यर्ताओ पर तत्काल गिरफतारी पर रोक लगे।

वि.हि.प. प्रतिनिधि मंडल

पद्मश्री डॉ. रविन्द्र नारायण सिंह
(केन्द्रीय अध्यक्ष, विहिप)

मा. श्री आन्दकुमार

मा. श्री जन्मेजयकुमार

मा. श्री रणवीरकुमार

मा. श्री संजयकुमार

विषमता की जंजीरे तोड़े हिन्दु समाज

08 मई, 1974 को पुणे की सुप्रसिद्ध वसंत व्याख्यानमाला में बालासाहब देवरस का 'सामाजिक समता तथा हिन्दु संगठन' विषय पर भाषण हुआ। बालासाहब ने भाषण से पहले बारीकियों में जाकर विषय का अध्ययन किया। संस्कृत और दर्शनशास्त्र के छात्र होने के बावजूद बालासाहब ने नागपुर के कृष्णशास्त्री बापट से पुरुष सूक्त को समझा और भाषण आलेख को कई कार्यकर्ताओं को पढ़कर सुनाया। भाषण देने से पहले उसकी टाइप प्रति पुणे में रहने वाले प्रांत संघचालक बाबाराव भिड़े को दिखाई। इसलिए संघ ही नहीं, भारत के जन जागरण के इतिहास में इस भाषण का असाधारण महत्व है। प्रस्तुत है बालासाहब का वही सारगर्भित व्याख्यान –

'सामाजिक समता तथा हिन्दु संगठन इस विषय का प्रारंभ होते ही 'हिन्दु कौन ?' यह प्रश्न सामने आता है। हिन्दु संज्ञा की अनेक परिभाषाएं उपलब्ध हैं। किंतु वे परिपूर्ण नहीं हैं। इसमें कुछ परिभाषाएं स्वीकृत भी हैं। किन्तु ऐसी परिभाषाओं को लेकर जब चर्चा प्रारंभ होती है । तो वह बिखर जाती है एवं विवाद में उसकी परिणिति होती है, ऐसा अनुभव में आता है। कोई भी परिभाषा कितनी भी ध्यानपूर्वक बनाई गई हो, अव्याप्ति या अतिव्याप्ति उसमें बनी रहती है। इस संदर्भ में हमारा यह अनुभव है कि इसीलिए हिन्दु संज्ञा को लेकर ही विवाद खड़ा करने का प्रयास चलता है। मैं स्वयं हिन्दु संज्ञा की परिभाषा देना नहीं चाहता, क्योंकि परिभाषा करना कठिन है। उसमें उपरोक्त त्रुटियों में से कुछ कमी अवश्य होगी, किन्तु हिन्दु संज्ञा की परिभाषा नहीं हो पाती, इस कारण हिन्दु समाज के अस्तित्व को नकारने का विचार करना भूल होगी। परिभाषा न होने पर भी हिन्दु समाज का अस्तित्व तो प्रत्यक्ष है, यह हम सभी अनुभव करते हैं। अंग्रेजों के शासनकाल में एक विचित्र विभाजन बनाया गया था। कुछ समष्टियां मुसलमान तथा बाकी सारी गैर मुसलमान, ऐसी वह रचना थी। हम सभी इसमें, गैर- मुसलमान संज्ञा में समाविष्ट थे। फिर भी हम अपने समाज के संबंध में इस प्रकार नहीं सोचेंगे, हम सभी हिन्दु हैं, फिर परिभाषा में इसे व्यक्त करना संभव हो या न हो। हम सभी हिन्दु हैं इसका प्रकटीकरण भिन्न-भिन्न पहलुंओं के माध्यम से होता है। भिन्न-भिन्न स्थानों पर, समय-समय पर इसका अनुभव भी होता है। हिन्दु समाज में इस संज्ञा के अंतर्गत कौन-कौन समाविष्ट है, इस विषय में भी सभी घटकों की एक निश्चित एवं समान धारणा है। कुछ वर्ष पूर्व अपने देश में एक 'कोड' बनाया गया हिन्दु कोड। संसद ने इसे पारित किया। वह पारित हो इसलिए जिन्होंने नेतृत्व किया उसमें पं. नेहरू, डॉ. आम्बेडकर थे। कोड प्रस्तुत होने के बाद जिस बहुसंख्यक तबकों में वह लागू करना था, उसे कौन-सी संज्ञा देना, यह समस्या उनके सम्मुख खड़ी हुई तो उन्हें कोई नाम सूझा नहीं। उन्हें इस कोडको 'हिन्दु कोड' ही कहना पड़ा। इस कोड में कौन समाविष्य है यह कहते समय प्रारंभ में ही उन्हें कहना पड़ा, मुसलमान, ईसाई, यहूदी तथा पारसी यह चार तबके छोड़ हिन्दुस्थान के अन्य सभी तबकों को जैसे सनातनी, लिंगायत, जैन, बौद्ध, सिख, आर्यसमाजी आदि सभी पर यह कोड लागू होगा। हिन्दु संज्ञा के अंतर्गत कौन समाविष्य है, यह स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि यह सभी पर लागू होगा तथा और भी आगे बढ़कर कहा कि उपरोक्त सूची में से बाहर भी जो शेष होंगे, उन सभी पर भी यह लागू होगा। तथा जो अपने आपको इसके बाहर मानता है, या जिसे लगता है कि हम पर यह लागू नहीं होता है, उसे यह प्रमाणित करना होगा। यही कारण है कि हिन्दु संज्ञा की निश्चित परिभाषा न होने के कारण हिन्दु यह समाज ही नहीं है, ऐसा विवाद जो समय-समय पर खड़ा किया जाता है, वह उचित नहीं है। हिन्दु कोड के दायरे में यह सभी लोग आते हैं, ऐसा पं. नेहरू और डॉ. आम्बेडकर कहते हैं। इसका निष्कर्ष यह हुआ कि इसकी पृष्ठभूमि में कुछ ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारण होंगे। किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा सभी जन-समुदायों को 'हिन्दु' इस संज्ञा में सामाजित कर में आगे विषय रखूंगा।

ऐसे सभी हिन्दुओं को हमें संगठित करना है। संगठित करना इसके मायने यह कि उन सभी को साथ लाना। संगठन भीड़, मोर्चा या कोई सभा इस अर्थ से नहीं। संगठन का अर्थ सभी को साथ लाना, साथ रहने का महत्व उन्हें विशद करना और एक साथ रहें इसलिए प्रयास करना। यह कार्य साधारण नहीं, दुष्कर है। कुछ आधार तो भावनात्मक रहेगा, यह पक्का है। कारण मनुष्य स्वभावतः ऐसा ही बना है। इसलिए यह हमारी मातृभूमि है, हम इसके पुत्र हैं। हजारों वर्षों से हम यहां बसे हुए हैं, हमने इस देश को बनाया है - बिगाड़ा है, अतीत में हमने इस देश का उज्जवल इतिहास निर्माण किया, विश्व को भी हमारी कुछ देन है, यह श्रेय भी हमारा है, कुछ बिगड़ा है तो उसके दोषी भी हम ही है; यह कारण-परंपरा है कि इस मातृभूमि के पुत्र होने के कारण हम सभी एक साथ रहें। एकसाथ व्यवहार करें, ऐसा भावनात्मक आह्वान तो अवश्यंभावी है। जो स्वयं को 'प्रामाणिक' समझते हैं, व्यवहारी समझते हैं, तर्क संगत मानते हैं, उन्हें भी ऐसा भावात्मक आधार आवश्यक हो जाता है और इसमें कुछ गलत भी नहीं है। द्वितीय विश्वयुद्ध में रूस पर गहरा संकट छा गया तब स्टॉलिन को भी 'हम एक राष्ट्र हैं' इसका स्मरण रूसी जनता को कराना पड़ा। राष्ट्रीयता तथा मातृभूमि का आह्वान करना पड़ा।

ऐसे भावात्मक आह्वान की आवश्यकता अनिवार्य है। किन्तु इतना ही पर्याप्त है क्यां? इस विषय में भी विचार की आवश्यकता है। कार्य

करते समय यह ध्यान में आता है कि, इतने मात्र से काम नहीं चलेगा। भावात्मक आह्वान तो अनिवार्य है ही, किन्तु साथ-साथ जिनके लिए यह भावात्मक आह्वान है, ऐसे सभी बंधुओं को समाज में चलते-फिरते इसका व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए कि, हम सब एक हैं, हम सब समान हैं। इस एकत्व का अनुभव सदैव सहजता से होना चाहिए। भावात्मक आह्वान के साथ-साथ व्यवहार में भी यह अनुभव सभी घटक पाएंगे तभी संगठन की एकता की नींव दृढ़ होगी, चिरस्थायी होगी। इसी कारण भावात्मक आह्वान के साथ ही समाज के सभी घटकों को ऐसा समानता का व्यवहार अनुभव हो, यह आवश्यक है। यह दृष्टिगत रखकर विचार होना क्रम प्राप्त है।

विगत कई शततों के इतिहास से हमने यह जाना है कि मुट्ठीभर मुसलमान यहां आये, अंग्रेज तो बहुत ही अल्प थे, फिर भी दोनों यहां आये, अंग्रेज तो बहुत ही अल्प थे, फिर भी दोनों यहां शासक बने। हममें से कई लोगों का उन्होंने कन्वर्जन किया। उन्होंने हमारे बीच तरह-तरह के भेद निर्माण किये। ब्राह्मण-अब्राह्मण विवाद खड़ा किया, सवर्ण-अछूत विवाद खड़ा किया। इसके लिए हम मुसलमान तथा अंग्रेजों को दोषी ठहराते हैं। उन्होंने ऐसा कुछ किया होगा, वे दोषी थे और है-दायित्वमुक्त नहीं हो सकते। कुछ लोग ऐसा मत पदर्शित करते हैं कि इसके लिए अंग्रेज-मुसलमान उत्तरदायी हैं। उन्होंने यह भेद, विकृतिओं को उभारा। इसमें कुछ अत्यांश है। बर्लिन में जैसी एक दीवार खड़ी की गई है, क्या वैसी दीवाल खड़ी कर हम अन्य राष्ट्रों से, विचारों से, संस्कृति से अपने-आपको अलग रख पाते? यह तो असंभव था। दीवारें कौन खड़ी करते हैं? दीवारें वे लोग खड़ी करते हैं जो स्वयं के संबंध में सशंकित हैं, जो अन्य लोगों के तत्वज्ञान से भयभीत हैं। जो परंपरा साथ-साथ अस्तित्व में होती है, उसमें जो उत्तम होगी, उसका ही श्रेष्ठत्व सभी मानेंगे।

इसलिए औरों को दोष देना छोड़कर, अंतर्मुख होकर, हमारे भीतर क्या कमियां थीं कि जिसके फलस्वरुप हमारे दोषों का लाभ अन्य लोगो उठा सके, यह चिंतन भी हमें करना होगा। संघ-संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार इस विषय में कुछ अलग रीति से सोचते थे। जब-जब यह विषय उनके सामने उपस्थित होता, तब वे कहते कि मुसलमान या अंग्रेजों को दोषी ठहरा कर ही हम मुक्त नहीं हो सकेंगे। हमारे भीतर की कमियां, दोष भी पहचानना होगा। इस रीति से हम भी सोचने लगें तो हमें भी सोचने लगें तो हमें भी यह स्वीकार करना होगा कि हमारे समाज में स्थित विषमता एक ऐसा प्रभावी कारण था कि जिसके कारण अनेक लोगों ने धर्म को त्याग दिया। कई विवाद हमारे समाज में फैलाकर पराये लोग हमारे समाज को तोड़ सके। वर्ण-भेद, जाति-भेद, छुआछूत, यह सामाजिक विषमता के ही कुछ दृश्य परिणाम है। हिन्दु समाज का संगठन करने वाले तथा औरों का भी यही अनुभव है कि समाज में विचरण करते समय पग-पग पर यह प्रश्न बाधाएं उत्पन्न करते है। इसलिए औरों पर दोष ही करना होगा।

हिन्दु संगठकों का चिंतन इस विषय में कैसा हो? उनके लिए तो यह एक जटिल विषय है। क्योंकि हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है, धर्म पर गर्व है। हमारी यह धारणा है कि जिस पर हम गर्व करें, ऐसा बहुत कुछ हमारे पास है। दुनिया के लोग भी इसे मानते हैं कि हमने यहां इस प्रकार का जीवन दर्शन निर्माण किया, ऐसी जीवन विषयक धारणा निर्माण की कि जो मानवी जीवन के उपयुक्त हैं, इष्ट है। अनेक शतकों की उथल-पुथल के बाद भी इस देश के निवासियों ने अपने शाश्वत जीवन-मूल्य अबाधित रखे। वे भविष्य में भी बने रहें, यह हम सभी की चाह हैं। यह शाख्वत जीवन-मूल्य, संस्कृति पर गर्व करना, और इन बंधनों का ध्यान रखकर हमारे अंदर विद्यमान दोष, कमियों, वैषम्य के संबंध में चिंतन करना ऐसी यह विचार पद्धति है। यह तो सभी समझते हैं कि पुरानी परंपराओं पर गर्व करते हुए भी, पुराना सभी अनुकरणीय, परिवर्तनीय शास्त्रोक्त ऐसा सोचकर नहीं चलेगा। 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्', कोई परंपरा प्राचीन है, इसीलिए वह अनुकरणीय है वह यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी कभी-कभी हिन्दु संस्कृति के समर्थक यह भी सोचते हैं कि, पुरानी अनेक रूढ़ियां हमारे समाज में अब भी विधमान हैं, अपने पुरखों ने उन्हें जीवित रखा, इससे उनका तो कुछ बिगड़ा नहीं, फिर अब नये सिरे से सोचने का कारण क्या? किन्तु यह सोच भी उचित नहीं है। **'तातस्यकूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।'** यह सुभाषित हम जानते ही हैं। 'हमारे दादा-परदादाओं का कुआं है, पानी खारा है, फिर भी हमारे दादा परदादा इसे ही पीते रहे, उनमें यदि कोई दोष उत्पन्न नहीं हुआ, फिर हमें वह पीने में क्या आपत्ति है?' यह विचार करने की जो एक पद्धति है, वह ठीक नहीं है। हमारे सुभाषितकारों ने ऐसे व्यक्ति की सराहना नहीं की है। उसे 'कापुरुष' कहा हैं। जल का आधुनिक प्रबंध उपलब्ध है, नल लगे हुए हैं, फिर भी हम पुराने कुएं का जल ही पीते रहेंगे और इसके लिए दादा परदादा की गवाही देते रहेंगे, यह कार्य इष्ट नहीं है, यह तो स्पष्ट ही है। इसीलिए, पुराना सब सहीतथा जो अब तक चलता आया है और जिस कारणों से वह चलता आ रहा है इस कारण वह आगे भी चलेगा, ऐसी सोच समाज के संबंध में हितकारक नहीं होगी। यह हिन्दु संगठन का कार्य करने वालों को ध्यान में लेना अत्यंत आवश्यक है। समाज में सभी प्रकार के लोग रहेंगे। उसमें कुछ लोग ऐसे होते हैं किसी भी नई चीज देखने में आई तो उनके लिए वह ग्रहणयोग्य, आदर्श, श्रेष्ठ प्रतीत होती है। अन्य एक तबका समाज में ऐसा है कि कोई भी आधुनिक उपक्रम उन्हें त्याज्य, बेकार, अनुपयुक्त लगता हैं। ऐसे दोनों वर्ग के लोग समाज में होना स्वाभाविक है। परंतु जिन्हें समाज को दोषरहित बनाना है एवं समाज को संगठित करना है, उन्हें इस संबंध में किसी भी प्रकार की इकतरफा भूमिका ग्रहण न करते हुए, **'परीक्ष्यान्तरत भजन्ते'** यह दृष्टिकोण रखना चाहिए। संतुलित व्यवहार करना, जो ग्राह्य है, उसे रखना, जो त्याज्य है, उसे छोड़ना उसमें दुख का कुछ कारण नहीं ऐसा सोचकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जितनी अधिक मात्रा में हम हिन्दु संगठन का कार्य और अच्छी भांति बढ़ा पाएंगे, वैषम्य का निर्मूलन कर पाएंगे, ऐसी मेरी धारणा है। इसलिए अधिकाधिक लोग इस पद्धति से सोचेंगे तथा व्यवहार करने उदयुक्त होंगे, इस ओर ध्यानपूर्वक प्रयास करना चाहिए।

(क्रमशः)

द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामीश्री सदानन्द सरस्वती जी महाराजश्री ने धर्म प्रचार यात्रा के अंतर्गत ग्राम छिडिया तापी गुजरात में जिस आदिवासी पुनिया भाई ने 300 हिंदुओं को ईसाई होने से बचाया है उससे मिलकर अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

विश्व हिन्दू परिषद - बजरंग दल द्वारा जिला संतनगर - गांधी प्रखंड में महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ समरसता विभाग द्वारा दि. २८-१०-२३ जिला लवकुश नगर में आयोजित हुआ।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर २७ अक्टूबर २०२३ समरसता गौष्ठी का कार्यक्रम मा. विनायकरावजी देशपांडेजी की उपस्थिति में आयोजित हुआ। मंच पर श्री गोविंद सहा प्रांत समरसता प्रमुख एवं संत गण एवं विहिप पदाधिकारी गण।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर विश्व हिन्दू परिषद उज्जेन ग्रामीण के राजपुत बोर्डिंग महीदपुर - उज्जैन में सार्वजनिक समरसता गौष्ठी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मंच पर श्री प.पू. श्री सदाजपदासजी महाराज, प.पू. आचार्यश्री बलरामजी दावरे, श्रीमान देवजीभाई रावत, श्री राजकुमारसिंहजी तथा शहर के प्रबुद्ध नागरिक गण उपस्थित रहे।

महर्षी भगवान वाल्मीकी जयंती के पावन पर्व पर छींदवाडा - मालवा प्रांत समरसता संगौष्ठी, विविध जाति बिरादरी संमेलन का आयोजन हुआ। मंच पर विविध जाति-बिरादरी प्रमुख एवं श्री देवजीभाई रावत, श्री राजकुमारसिंहजी

विश्व हिन्दू परिषद सेवा विभाग द्वारा हरिद्वार उत्तराखंड "वात्सल्य वाटिका" पुरातन छात्र संमेलन आयोजन हुआ। मा.श्री अजयजी पारेख - अ.भा. समरसता प्रमुख तथा श्री अजयजी प्रांत संगठन मंत्री एवं अन्य पदाधिकारी गण।

Registration under Postal Registration No. AHD-C/83/2021-2023 Issued by SSPOS Ahmedabad City Division
Valid upto 31st December 2023. RNI Reg. No. GUJHIN/2016/70892
Permitted to Post at AHD PSO on 16th of Every Month. Published on 10 November - 2023

॥ जय महाराज ॥
श्री संतराम सद्‌गुरू शरणंमम

श्री संतराम मंदिर - नडियाद, गुजरात

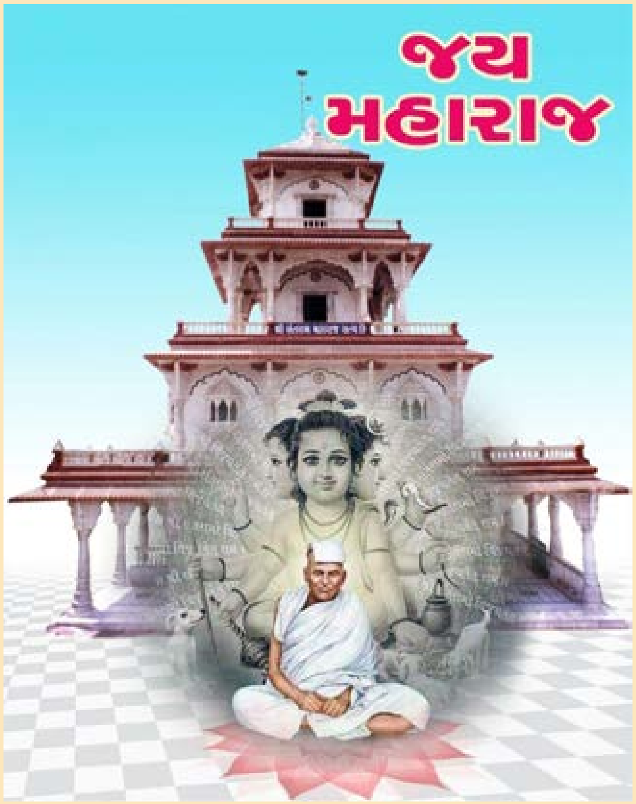

॥ जय महाराज ॥

प.पू.महंतश्री रामदासजी महाराज
श्री संतराम मंदिर - नडियाद

Following service are rendered by the santram Mandir, Nadiad

Social Services :

1. Shree Santram Bhojnalay Annapurna (Free food services)
2. Shree Santram garbh-Sanskar Kendra, Tapovan (Pregnancy Health Care Center)
3. Paankhar Ni Haash (A Center for Senior citizens)
4. Mu' tidham Smashan gruha (Funeral place)
5. Shree Santram Asthi Visarjan Service
6. Shree Santram Viklang Sahay Kendra (A Helping Center for Physically Handicapped people)
7. Shree Santram Sivan class Kendra (A Training Center for Stitching by Ladies)
8. Shree Santram Jyotish Karyalay (An Astrology Center)
9. Relief Activities at the Time of Natural Calamities
10. Providing Grossary to Various Hostels, Hospitals, Vedik Pathshala, parik rammavashi (Travellers of Narmadd River)
11. Proviing Grossary for Need ful people.
12. Hostels For Students
13. Shree Santram Balsanskar Kendra (Childern Class for Inculcating Values and Ethical Life)
14. Shree Santram Yuva sabha (Activity for Youth)
15. Learning of Bhagawat Geeta shlok as Chanting
16. Shree Santram Atithi Gruha (Lodging and Boarding Facilities)
17. Shree Santram Sanskar Vartul
(Various Activities are carried out by the Center for imparting values in youth)

Educational Services :

1. Shree Santram Vidhyalay :
Lower K.G., Upper K.G. from1 st to 12 th Std (gujrati & English Medium)
2. Shree Narayan Computer Training Center
3. Shree Santram Hostels for Students

Medical Services :

1. Shree Santram Eye Hospital (Netra Chikitsalay)
2. Shree Santram Physiotherapy and Health Care Center
3. Shree Santram Radiology and Imaging Center (Sonography, Digital X-ray, Mammography, O.P.G, CT - Scan and M.R.I.)
4. Shree Santram Pathology Center (Laboratory)
5. Shree Santram Dispensary (Dardi Seva Kendra)
6. Shree Santram E.C.G. Department
7. Shree Santram Honorary Doctor Department
8. Shree Santram Dental Department
9. Shree Santram Ayurvedic Deparment
10. Shree Santram Homeopathy Department
11. Shree Santram Medical Store (Free Medicines)
12. Shree Santram Center for Various Health Related Diagnosys & Treatment Activities & Various

Surgical Camps

13. Shree Santram Oxygen Department (Free)
14. Shree Santram Ambulance (Free)
15. C.C. Patel General Hospital, Sojitra.

Contact us :

Shree Santram Mandir

Nadiad-387001, Gujarat, India Ph.(0268) 25 50005/06
Web : www.santram.info Whatsapp : +919427203131
Email : jaymaharaj@santram.info

Book-Post

प्रतिष्ठा में, ______________________

____

____

Printed, Published and Owned by DEVJIBHAI JEHABHAI RAVAT and Printed at Sudarshan Graphics, Basement, Tirupati Avenue, Pushpakunj Society, Nr. Apsara Cinema, Kankaria, Ahmedabad - 380 028 and published from Dharmada Davakhana, Rabari Vasahat, Nr. Dandi Bridge, Gandhi Ashram, Ahmedabad - 380 027. Editor - DEVJIBHAI JEHABHAI RAVAT

नोध : समरसता सेतु मासिक में प्रकाशित लेख और व्यक्त विचार, दृष्टिकोण वह सम्बन्धित लेखको के हैं। संपादक तंत्री उससे सहमत होना आवश्यक नही। सभी कानूनी विवादोका निपटना अहमदाबाद न्यायालय क्षेत्र अधिकारितामें रहेगा।